ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र

अप्रैल 2018 (द्वितीय)

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी जन्मदिवस (26 अप्रैल)

Email : aryapsharyana@yahoo.in

Visit us : www.apsharyana.org

श्री रमेश आर्य सभा वेदप्रचार अधिष्ठाता एवं उनकी टीम द्वारा किए गए वेद प्रचार कार्य की झलकियां।

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,119
विक्रम संवत् 2075
दयानन्दाब्द 195

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख-पत्रिका

वर्ष 14 अंक 6

सम्पादक :
उमेद शर्मा

पत्रिका-शुल्क

देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये

विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सम्पादक-मण्डल

1. आचार्य सोमदेव
2. डॉ० जगदेव विद्यालंकार
3. श्री चन्द्रभान सैनी

सम्पादकीय विभाग

सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष : 89013 87993
कार्यालय : 01262-216222

॥ ओ३म् ॥

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

अप्रैल, 2018 (द्वितीय)

16 से 30 अप्रैल, 2018 तक

इस अंक में....

1. जन्मदिवस पर विशेष– पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी 2
2. जिज्ञासा-विमर्श (ईश्वर) 3
3. अमर हुतात्मा महाशय राजपाल 5
4. पावन-पावन दयानन्द 6
5. गोरक्षा–एक यक्ष प्रश्न? 8
6. श्रीयुत राजेन्द्र 'जिज्ञासु' एक विलक्षण व्यक्तित्व 10
7. महर्षि दयानन्द जीवन चरित्र (भूमिका) 11
8. स्वस्थ एवं सुखी रहने के सूत्र 12
9. समाचार-प्रभाग 13

सूचना

सभी आर्यसमाजों को, आर्य शिक्षण संस्थाओं को सूचित किया जाता है कि अपने सभी प्रकार के प्रचार कार्यक्रमों का विवरण 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका में छापने के लिए भेजें। साथ ही विद्वानों, लेखकों, बुद्धिजीवियों से आग्रह है कि वे अपने लेख, कविता आदि निम्न ई-मेल अथवा पते पर भेजें।

सम्पादक 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001
E-mail : aryapsharyana@yahoo.in
Website : www.apsharyana.org

जन्मदिवस पर विशेष-

पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी

पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् थे। पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी की गिनती आर्यसमाज के पाँच प्रमुख नेताओं में की जाती थी। दयानन्द सरस्वती के देहान्त के बाद गुरुदत्त विद्यार्थी ने उनकी स्मृति में (दयानन्द एंग्लो वैदिक कॉलेज) की स्थापना का प्रस्ताव रखा था। गुरुदत्त विद्यार्थी, लाला लाजपतराय और लाला हंसराज के प्रयत्नों से ही 1 जून, 1886 को लाहौर, पाकिस्तान में डी.ए.वी. स्कूल की स्थापना हुई थी।

पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी का जन्म 26 अप्रैल, 1864 ई० में ब्रिटिश कालीन पाकिस्तान के मुलतान में प्रसिद्ध वीर सरदाना कुल में हुआ था। इनके पिता का नाम लाला रामकृष्ण था, जो फारसी के प्रसिद्ध विद्वान् थे। गुरदत्त जी ने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा मुलतान में पाई और फिर लाहौर आ गए। यहाँ लाला हंसराज और लाला लाजपतराय भी पढ़ रहे थे। तीनों की आपस में बहुत घनिष्ठता हो गई। गुरुदत्त को विज्ञान में रुचि थी, इसके कारण वे हर चीज को विज्ञान की कसौटी पर कसकर देखते थे। पण्डित गुरुदत्त ने विज्ञान वर्ग से एम.ए. तक की शिक्षा प्राप्त की थी। सन् 1883 में जब स्वामी दयानन्द सरस्वती बीमार थे, तो लाहौर से दो लोगों को उनकी सेवा के लिये भेजा गया, जिसमें से एक गुरुदत्त भी थे।

गुरुदत्त जन्म से अत्यन्त मेधावी थे और वैरागी प्रकृति के थे। विद्यार्थी जीवन व युवावस्था में पुस्तकों को पढ़ने में आपकी सर्वाधिक रुचि एवं लगन थी। बचपन में ही आपने उर्दू व अंग्रेजी के प्रसिद्ध विद्वानों के ग्रन्थों को पढ़ लिया था। पाश्चात्य वैज्ञानिकों की तरह ही आप नास्तिक तो नहीं परन्तु ईश्वर के अस्तित्व में संशयवादी अवश्य हो गये थे। लाहौर स्थित देश के सुप्रसिद्ध गवर्नमेंट कॉलेज के आप सबसे अधिक मेधावी व योग्यतम विद्यार्थी थे तथा अपनी कक्षा में सर्वप्रथम रहा करते थे। विज्ञान में एम.ए. में भी आप पूरे पंजाब में सर्वप्रथम रहे। यद्यपि आप व्यायाम आदि करते थे और स्वास्थ्य का ध्यान भी रखते थे परन्तु पढ़ने का शौक ऐसा था कि इस कारण से आप असावधानी कर बैठते थे।

महर्षि दयानन्द के जीवन काल 1825-1883 में देशभर के अनेक लोग उनके संपर्क में आये जिनमें से कई व्यक्तियों को उनका शिष्य कहा जा सकता है, परन्तु सभी शिष्यों में पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी उनके अनुपम व अन्यतम शिष्य थे। सभी मित्र व निकट सहयोगी आपको वैदिक धर्म का सच्चा विद्वान् व नेता स्वीकार करते थे। पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी को इस बात का श्रेय प्राप्त था कि उन्होंने महर्षि दयानन्द के न केवल दर्शन ही किये थे अपितु उनकी मृत्यु के दृश्य को कुछ ही देरी से सामने से देखा था। महर्षि दयानन्द के बाद उनके साक्षात् शिष्यों में संस्कृत व्याकरण का कोई प्रमुख प्रथम विद्वान् हुआ तो वह आप ही थे। संस्कृत के प्रचार-प्रसार का कार्य महष्रि दयानन्द के बाद यदि प्रथम प्रभावशाली रूप से किसी ने किया तो वह पण्डित गुरुदत्त जी ने ही किया। आपने अपने घर पर ही संस्कृत श्रेणी व कक्षायें खोल रखी थी जिसमें सरकारी सेवा में कार्यरत बड़ी संख्या में लोग संस्कृत अध्ययन किया करते थे जिनमें कई उच्चाधिकारी थे। संस्कृत पर आपके असाधारण अधिकार का प्रमाण आपका ईश, माण्डूक्य व मण्डूक उपनिषदों का अंग्रेजी में किया गया प्रभावशाली व प्रशंसनीय भाष्य एवं अनुवाद है। यह कार्य उन दिनों सरल नहीं था और इस कोटि का भाष्य अंग्रेजी में किया जाना शायद किसी के लिए भी संभव नहीं था।

स्वामी दयानन्द के देहान्त के बाद गुरुदत्त ने उनकी स्मृति में 'दयानन्द एंग्लो वैदिक कॉलेज' की स्थापना का प्रस्ताव रखा। इस विद्यालय के कार्य के लिये गुरुदत्त ने देश के कई भागों में सभाएं कीं और वैदिक ज्ञान के साथ अंग्रेजी के ज्ञान की महत्ता भी बताई। लाला लाजपतराय के जोशीले भाषण, गुरुदत्त की अपील और लाला हंसराज के प्रयत्नों से तीन साल में 20 हजार नकद और 44 हजार रुपये के आश्वासन उन्हें मिले। अन्त में 1 जून 1886 को लाहौर में डी.ए.वी. स्कूल की स्थापना हो गई और लाला हंसराज इस विद्यालय के प्रथम प्राचार्य नियुक्त हुए।

पण्डित जी का जीवन बहुआयामी जीवन था। वह लोकप्रिय वक्ता व उपदेशक थे। जनता उनके विचारों को ध्यान से सुनती थी और उनकी बातों का पालन करती थी। वह ऐसे वक्ता थे जिनकी कथनी व करनी एक थी। वह अपने जीवन का एक-एक क्षण वैदिक धर्म, संस्कृति के उत्थान व समृद्धि के लिए व्यतीत करते थे। उनके कार्यों का

क्रमशः पृष्ठ 15 पर......

जिज्ञासा-विमर्श (ईश्वर)

❑ आचार्य सोमदेव, ऋषि उद्यान, अजमेर

जिज्ञासा-1 सत्यार्थप्रकाश में ओ३म् शब्द में स्थित अ,उ,म् अक्षरों के निम्न प्रकार अर्थ बताए हैं-

अ-विराट्, अग्नि, विश्व। उ-हिरण्यगर्भ, वायु, तेज। म्-ईश्वर, आदित्य और प्रज्ञा।

स्व० श्री रामसिंह जी भजनोपदेशक ने अपनी पुस्तक 'ओ३म् की व्याख्या' (प्रकाशक-विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द) में अकार से ब्रह्म, उकार से जीव और मकार से प्रकृति भी ग्रहण करने के लिए लिखा है तथा आगे काफी विस्तृत व्याख्या की है।

मेरे द्वारा इस प्रकार बताने पर विद्वान् शास्त्री जी ने प्यार से कहा कि यह गलत है।

कृपया, मेरी भ्रान्ति प्रमाण सहित दूर करने का कष्ट करें कि क्या अकार, उकार व मकार से ब्रह्म, जीव व प्रकृति ग्रहण किये जा सकते हैं या नहीं? शास्त्री जी भी वृन्दावन गुरुकुल से स्नातक व विद्वान् हैं।

-सी.के. सक्सेना, सुभाष कॉलोनी, गुना, म.प्र.

समाधान-सत्यार्थप्रकाश में महर्षि ने **'ओम्'** का अर्थ करते हुए अ,उ,म्-इन तीनों अक्षरों के अलग-अलग अर्थ किये हैं। ये अर्थ महर्षि ने शास्त्र के अनुसार ही किये हैं। माण्डूक्य उपनिषद् में इसकी चर्चा मिलती है। विश्वादि के लिए-जागरितस्थानो वैश्वानरोऽकार: प्रथमा मात्रा। (माण्डूक्य 9) ओम् की प्रथम मात्रा अकार है। उसका सम्बन्ध जागरित स्थान से है और वह वैश्वानर=विश्वानर=विश्व-सम्बन्ध है। तैजसादि-स्वप्नस्थानस्तैजस उकारो द्वितीय मात्रा (माण्डूक्य 10) ओम् की द्वितीय मात्रा उकार है। उसका सम्बन्ध स्वप्न स्थान से है और तैजस है। प्राज्ञादिसुषुप्तस्थान: प्राज्ञो मकारस्तृतीया मात्रा। (माण्डूक्य 11) ओम् की तृतीय मात्रा मकार है। उसका सम्बन्ध सुषुप्त स्थान से है और वह प्राज्ञ है। यहाँ इतना सारा लिखने का तात्पर्य यह है कि ओम् का जो अर्थ-अकार से विराट्, अग्नि, विश्वादि, उकार से हिरण्यगर्भ, वायु, तैजसादि तथा मकार से ईश्वर, आदित्य, प्राज्ञादि किया है, वह शास्त्र सम्मत है।

आपने पूछा है कि अकार से ब्रह्म, उकार से आत्मा और मकार से प्रकृति-ऐसा अर्थ किया जा सकता है या नहीं? उत्तर-नहीं किया जा सकता, क्योंकि इसमें कोई इस प्रकार का शास्त्रीय प्रमाण नहीं है। कहीं कोश में भी ऐसा अर्थ देखने को नहीं मिलता। हाँ, कुछ विद्वानों की कल्पना अवश्य हो सकती है। कल्पना कोई कुछ भी कर सकता है, उसको कोई क्या कह सकता है। महर्षि दयानन्द जी ने तो 'ओम्' को परमात्मा का मुख्य और निज नाम ही माना है जो कि वेदसम्मत है।

जिज्ञासा-2 क्या ऐसे भी गुण हैं जो ईश्वर में नहीं हैं?

-राधामोहन, बाँस बरेली, उ.प्र.

समाधान-ऐसे बहुत से गुण हैं जो ईश्वर में नहीं हैं। कुछ का वर्णन यहाँ करते हैं-

ईश्वर में रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, शब्द गुण नहीं हैं। हलका-भारी रूप गुण ईश्वर में नहीं हैं। राग, द्वेष इच्छा आदि गुण परमेश्वर में नहीं हैं। संयोग-वियोग ईश्वर में नहीं हैं। अविद्या, जन्म-मरण आदि गुण ईश्वर में नहीं हैं। एकदेशीय, छोटा-बड़ा, ऊँचा-नीचा गुण ईश्वर में नहीं है। अन्याय, क्रूरता, हिंसा, पाप, छल, कपट परमेश्वर में नहीं हैं। इस प्रकार जितने भी परमेश्वर के कर्म व स्वभाव से विपरीत गुण हैं, वे गुण परमेश्वर में नहीं हैं। इसी आधार पर उसको निर्गुण कहा गया है, मात्र निराकार होने से उसे निर्गुण नहीं कहा गया है।

जिज्ञासा-3 कृपया मेरे कुछ प्रश्नों के उत्तर दें?

(क) क्या ईश्वर संसार में किसी स्थान विशेष में, किसी काल विशेष में रहता है? क्या ईश्वर किसी जीव विशेष को किसी समुदाय विशेष के कल्याण के लिए और दुष्टों का नाश करने के लिए भेजता है?

(ख) क्या ईश्वर सब कुछ कर सकता है? क्योंकि उसे सर्वशक्तिमान् कहा गया है?

(ग) क्या ईश्वर अपनी ही इच्छा से किसी व्यक्ति विशेष को धन, बल, प्रतिष्ठा, सम्मान, सफलता, सुख आदि देता है?

-एक जिज्ञासु

समाधान-(क) ईश्वर इस संसार के स्थान विशेष वा काल विशेष में नहीं रहता। परमेश्वर संसार के प्रत्येक स्थान में विद्यमान है। जो परमात्मा को एक स्थान विशेष पर मानते हैं, वे बालबुद्धि के लोग हैं। वेद ने परमेश्वर को सर्वव्यापक कहा है। वेदानुकूल सभी शास्त्रों में भी परमात्मा को सर्वव्यापक कहा गया है। एक स्थान विशेष पर परमेश्वर को कोई सिद्ध

नहीं कर सकता, न ही शब्द प्रमाण से और न ही युक्ति तर्क से। हाँ, ईश्वर शब्द प्रमाण और युक्ति तर्क से विभु=सर्वत्र व्यापक तो सिद्ध हो रहा है, हो सकता है। वेद में कहा-

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥

(य० 31.3)

इस पुरुष की इतनी महिमा है कि यह सारा ब्रह्माण्ड परमेश्वर के एक अंश में है, अर्थात् वह ईश्वर समस्त ब्रह्माण्ड में समाया हुआ अनन्त है। यह समस्त जगत् परमात्मा के एक भाग में है, अन्य तीन भाग तो परमात्मा के अपने स्वरूप में प्रकाशित हैं अर्थात् परमात्मा अनन्त है, सर्वत्र विद्यमान है, उसको किसी एक स्थान पर नहीं कह सकते।

नहि त्वा रोदसी उभे ऋघायमाणमिन्वतः।
जेषः स्वर्वतीरपः सं गा अस्मभ्यं धूनुहि॥

(ऋ० 1.10.8)

इस मन्त्र के भावार्थ में महर्षि लिखते हैं-''जब कोई पूछे कि ईश्वर कितना बड़ा है तो उत्तर यह है कि जिसको सब आकाश आदि बड़े-बड़े पदार्थ भी घेरे में नहीं ला सकते, क्योंकि वह अनन्त है। इससे सब मनुष्यों को उचित है कि उसी परमात्मा को सेवन, उत्तम-उत्तम कर्म करने और श्रेष्ठ पदार्थों की प्राप्ति के लिए उसी से प्रार्थना करते रहें। जब जिसके गुण और कर्मों की गणना कोई नहीं कर सकता, तो कोई अंत पाने को समर्थ कैसे हो सकता है? और भी-''

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धमपापाविद्धम्। कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः॥ (य० 40.8)

इस मन्त्र में परमेश्वर को सब में व्याप्त कहा है। इस व्याप्ति से ज्ञात हो रहा है कि परमात्मा किसी स्थान विशेष पर नहीं अपितु सर्वत्र है। इस प्रकार परमेश्वर के सर्वत्र व्यापक स्वरूप को सिद्ध करने के लिए शास्त्र के हजारों प्रमाण दिये जा सकते हैं। कोई भी प्रमाण ऐसा उपलब्ध नहीं होता जो परमात्मा को एकदेशीय सिद्ध करता हो।

युक्ति से भी कोई परमात्मा को किसी स्थान विशेष पर सिद्ध नहीं कर सकता। आज विज्ञान का युग है, वैज्ञानिकों ने समस्त पृथिवी, समुद्र, आकाश आदि को देख डाला है। जिन किन्हीं का भगवान् समुद्र, पहाड़, आकाश आदि में होता तो अब तक वह भगवान् वैज्ञानिकों के हाथ में होता। जो लोग ईश्वर को ऊपर सातवें वा चौथे आसमान अथवा इससे कहीं और ऊपर मानते हैं, वे यह सिद्ध नहीं कर सकते कि कौन-सा आसमान ऊपर है, कौन-सा आसमान नीचे, क्योंकि प्रमाणसिद्ध यह पृथिवी गोल है। इस गोल पृथिवी लगभग चारों ओर मानव आदि प्राणी रहते हैं।

जो मनुष्य भारत में रहते हैं, अर्थात् पृथिवी के ऊपरी भाग पर रहते हैं, उनका आसमान उनके सिर के ऊपर और जो मनुष्य अमेरिका आदि देशों में हैं, अर्थात् पृथिवी के निचले भाग में रहते हैं, उनका आकाश (आसमान) भारत आदि देश में रहने वालों की अपेक्षा विपरीत होगा। अर्थात् भारत वालों के पैरों में आकाश होगा। ऐसा ही पृथिवी के अन्य स्थानों पर रहने वाले मनुष्यों का आकाश जाने। पृथिवी के चारों ओर आकाश है, आसमान है, पृथिवी पर रहने वाले मनुष्यों के सिर जिस ओर होंगे, उनका आसमान उसी ओर होगा। ऐसा विचार करने पर जो परमात्मा को आसमान में मानते हैं, वे भी एक स्थान विशेष पर सिद्ध नहीं कर सकते। इस विचार से भी परमात्मा सर्वत्र ही सिद्ध होगा, इसलिए परमात्मा सब स्थानों पर विद्यमान है, न कि किसी एक स्थान विशेष पर। स्थान विशेष की कल्पना ब्रह्माकुमारी मत वालों की भी है। उनका कहना है कि यदि ईश्वर को सर्वव्यापक मानते हैं तो ईश्वर गन्दगी में शौच आदि में भी होगा, यदि ऐसा होगा तो ईश्वर भी गन्दा हो जायेगा। इन ब्रह्माकुमारी वालों ने ईश्वर को कितना कमजोर बना दिया? इन ब्रह्माकुमारी वालों को यह नहीं पता कि यह गंदगी भौतिक है और ईश्वर अभौतिक। परमेश्वर के अभौतिक और सदा पवित्र होने से परमेश्वर के ऊपर इस गन्दगी का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। हमारे ऊपर भी जो प्रभाव पड़ता है, वह इसलिए क्योंकि हमारे पास भौतिक शरीर इन्द्रियां आदि हैं, इनसे रहित होने पर हम जीवात्माओं पर भी उस गन्दगी का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। ईश्वर तो सर्वथा इनसे रहित है तो ईश्वर पर इस गन्दगी का प्रभाव कैसे पड़ेगा? इसलिए मलिनता से बचाने के लिए ईश्वर को एक स्थान विशेष पर मानना अज्ञानता ही है।

इसी प्रकार ईश्वर किसी काल विशेष में होता हो ऐसा नहीं है, परमेश्वर तो सदा सभी कालों में वर्तमान रहता है। काल विशेष में होने की कल्पना अवतारवादी कर सकते हैं, जो कि उनकी यह मान्यता सर्वथा असंगत है। वर्तमान, भूत और भविष्यकाल की आवश्यकता हम जीवों की अपेक्षा से है। परमेश्वर के लिए तो सदा वर्तमान रहता है, भूत, भविष्य परमात्मा के लिए नहीं है। परमात्मा सदा एकरस रहता है।

क्रमशः अगले अंक में......

अमर हुतात्मा महाशय राजपाल

❑ कन्हैयालाल आर्य, उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

गतांक से आगे.....

अन्तिम प्रहार-महाशय जी गुरुकुल कांगड़ी के वार्षिकोत्सव से लौटकर 6 अप्रैल 1929 को दुकान में आराम कर रहे थे तभी एक दुष्ट हत्यारे इल्मदीन ने महाशय राजपाल के सीने में दोधारी छुरा घोंप दिया। वीर राजपाल

जी का तत्काल प्राणान्त हो गया। हत्यारा जान बचाने के लिए भागा परन्तु महाशय विद्यारत्न जी ने हत्यारे को कसकर अपनी भुजाओं में जकड़ लिया और जब तक पुलिस आ नहीं गई तब तक उसे दबोचे रखा। देखते ही देखते महाशय जी की दुकान पर हजारों लोग एकत्रित हो गये। देवता स्वरूप भाई परमानन्द वहाँ पहुँच गये। देवता स्वरूप भाई परमानन्द जी ने महाशय राजपाल के बलिदान पर अपनी सम्पादकीय टिप्पणी में ठीक ही लिखा था, ''आर्यसमाज के इतिहास में यह अपने ढंग का तीसरा बलिदान है, पहला पं० लेखराम का, दूसरा स्वामी श्रद्धानन्द का और तीसरा बलिदान महाशय राजपाल जी का है।''

इल्मदीन पर मुकदमा चला और उसे मियांवाली जेल में फांसी मिली। उसकी लाश खोदकर लाहौर लाई गई और उसका शानदार जुलूस निकाला गया। कोई ही बड़े से बड़ा मुसलमान होगा जो इसकी अर्थी के साथ न गया हो। कादियानी पत्र 'लाईट' ने लिखा, ''प्रत्येक हिन्दू राजपाल है, इसलिए प्रत्येक मुसलमान को इल्मदीन बन जाना चाहिए।''

महाशय जी के मित्र कहा करते थे मौत से मत खेलो। वे कहते मौत से डरे तो जिन्दगी क्या? इसी मार्ग पर हँसते-हँसते अपनी जान दे दी।

अन्तिम यात्रा-महाशय जी का पोस्टमार्टम तो उसी सायंकाल हो गया था परन्तु लाहौर के हिन्दुओं ने यह निर्णय लिया कि अगले दिन हुतात्मा की शवयात्रा धूमधाम से निकाली जाये परन्तु मुसलमान अधिकारियों ने ब्रिटिश अधिकारियों के मन में निराधार भय का भूत बिठा दिया कि इससे शहर में दंगा हो जाएगा। सरकार ने धारा 144 लगा दी परन्तु हिन्दू भी अड़े रहे और आठ अप्रैल 1929 को महाशय राजपाल जी की शवयात्रा धूमधाम से निकली। शवयात्रा के समय लगभग 25 हजार व्यक्ति सम्मिलित हुए। श्मशान भूमि पहुँचने पर लगभग साढ़े तीन घण्टे लगे। नश्वर देह का चिता में रखकर महात्मा हंसराज जी ने मुखाग्नि दी। उस समय महाशय जी के बड़े पुत्र प्राणनाथ 11 वर्ष के थे परन्तु समस्त हिन्दू समाज के प्रतिनिधि के रूप में यह महात्मा हंसराज जी को यह कार्य सौंपा गया। पंजाब के सुप्रसिद्ध पत्रकार व कवि महाशय नानकचन्द जी ने महाशय राजपाल को श्रद्धांजलि देते हुए निम्न कविता लिखी-

फ़ख्र (स्वाभिमान) से सर उनके ऊँचे आसमां तक हो गए,
हिन्दुओं ने जब तेरी अर्थी उठाई राजपाल।
फूल बरसाये शहीदों ने तेरी अर्थी पै खूब,
देवताओं ने तेरी जय जय बुलाई राजपाल।
हो हर इक हिन्दू को तेरी ही तरह दुनिया नसीब,
जिस तरह तूने छुरी सीने पै खाई राजपाल।
तेरे कातिल पर न क्यों, इस्लाम भेजे लानतें,
जब मुजम्मत (निन्दा) कर रही है,
इक खुदाई (पूरी दुनिया) राजपाल।
मैंने क्या देखा कि लाखों राजपाल उठने लगे,
दोस्तों ने लाश तेरी जब जलाई राजपाल।

प्राण जाए पर वचन न जाए-सन् 1923 में महाशय राजपाल ने एक छोटी-सी पुस्तक 'रंगीला रसूल' उर्दू में प्रकाशित की जिसके मूल लेखक थे पं० चमूपति जी एम.ए., जो बाद में गुरुकुल कांगड़ी के आचार्य बने, परन्तु उसमें लेखक का नाम लिखा, 'दूध का दूध और पानी का पानी'। महाशय राजपाल जी ने यह वचन लेखक को दे दिया था कि इसके लेखक का नाम नहीं बताऊँगा और उसे जीवनभर निभाया। राजपाल पर कई वर्षों तक मुकदमा चला परन्तु उन्होंने इसकी पूरी जिम्मेवारी अपने ऊंपर ली और अन्तत: पंजाब हाईकोर्ट ने महाशय जी को सभी आरोपों से मुक्त कर दिया। स्वामी ओमानन्द जी आर्यसमाज के बलिदान नामक पुस्तक में लिखते हैं, 'इनके शहीद हो

शेष पृष्ठ 15 पर....

पावन-पावन दयानन्द

❑ इन्द्रजित्‌देव 9466123677

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का व्यक्तित्व व कृतित्व पतित-पावन ही नहीं, पावन-पावन भी था। भक्त अमीचन्द, वकील मुंशीराम, स्वामी सर्वदानन्द, रामप्रसाद बिस्मिल, लाला लाजपतराय के पिता राधाकृष्ण, गुरुदत्त विद्यार्थी,

महात्मा आनन्द स्वामी के पिता, मथुरा की वेश्या आदि कई ऐसे व्यक्ति हुए हैं जो महर्षि के प्रवचनों को सुनकर, उनसे मिलकर अथवा उनके साहित्य को पढ़कर अपना पतित या नास्तिक जीवन त्याग पावन व्यक्तित्व के धनी बने थे। इनके जीवन की घटनाएं वर्णित की जायें तो लेख का विषयान्तर हो जायेगा परन्तु यह प्रमाणित है कि महर्षि पतित-पावन थे। हमारा इस लेख का विषय पावन-पावन दयानन्द है। इसलिए पूर्वोक्त व्यक्तियों का नामोल्लेख करके आगे बढ़ते हैं।

ईश्वर, वेद, धर्म, यज्ञ, व्यास, ऋषि, कपिल ऋषि, योगेश्वर कृष्ण, छः शास्त्र, नारी, शूद्र आदि अनेक पदार्थ, विषय व वर्ग हैं जो पवित्र थे परन्तु विधर्मियों, अज्ञानियों, स्वार्थियों व दुराग्रहियों ने इन्हें ऐसे रूप में प्रस्तुत कर रखा था कि ये अपवित्र ही होते थे। कुतर्कों, गलत व्याख्याओं, प्रक्षिप्त कथाओं व अवैदिक ग्रन्थों के आधार पर पतित व उपेक्षणीय प्रतीत हो रहे थे। महर्षि दयानन्द ने यह सब देखा व जाना तो अपने ग्रन्थों, उपदेशों, पत्रों तथा शास्त्रार्थों द्वारा इन पर लगाए आरोपों-आक्षेपों को दूर किया तथा इनके वास्तविक, शुद्ध व पवित्र रूप में पुनर्प्रतिष्ठित किया अर्थात् पावन को पुनः पावन बनाने का प्रशंसनीय कार्य किया।

वेद ईश्वरीय वाणी है। ईश्वर पवित्रतम है। उसके कार्य, विचार व व्यवस्था सम्पूर्ण व पावन है। ईश्वर के बाद यदि कोई पवित्र है तो वह वेद ही हैं। पवित्र वस्तु से पवित्र की रचना होती है। मनु महाराज ने '**वेदाऽखिलो धर्ममूलम्**' कहकर वेदों की महत्ता घोषित कर दी है। सृष्टि के आरम्भ से लेकर महाभारत काल तक मनुष्य जाति के मन-मस्तिष्क पर वेदों का एकछत्र राज रहा है। वेद-ज्ञान लेकर आर्यों ने चक्रवर्ती राज किया व नये-नये आविष्कार किये, परन्तु महाभारत के उपरान्त सब कुछ बदल गया। वेद से श्रद्धा व आस्था कम हो गई क्योंकि कथित ब्राह्मणों व आचार्यों ने ऐसे-ऐसे ग्रन्थ बना लिए जिनमें सत्य व वेदानुकूलता न थी। कई वेद-भाष्यकारों ने वेदों में मांसभक्षण, सुरापान, पशुबलि, इतिहास, अश्लीलता व तर्कहीनता के अंश प्रस्तुत किये। पुराने आचार्यों में माधवाचार्य ने ऋग्वेद के थोड़े से अंशों का ही भाष्य किया। वेद व श्रुति के नाम से आदि शंकराचार्य उपनिषदों के ही प्रमाण देते रहे। महीधर, उव्वट तथा सायण आदि ने वेदों के जो भाष्य किये उनके विषय में इतना लिखना ही पर्याप्त है कि उन्हें पढ़कर किसी भी विचारशील व सत्याग्रही व्यक्ति की वेदों पर तनिक भी श्रद्धा नहीं रही थी। इन्हीं के आधार पर विधर्मियों तथा पाश्चात्य लेखकों ने भी वेदों पर सीधे आक्षेप किए। एक पाश्चात्य लेखक ने तो यहाँ तक लिखा-"वेद गडरियों के गीत हैं।" अशुद्ध वेदभाष्य के प्रमाण अनेक हैं परन्तु विस्तारभय से कुछ ही प्रमाण प्रस्तुत हैं-

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रोऽअजायत॥

(यजु० 31.11)

इस मन्त्र में समाज को मनुष्य शरीर से उपमा देकर ईश्वर ने कहा है कि "मुख के समान मुख्य गुण व कर्मों से सम्पन्न होने से ब्राह्मण वर्ण उत्पन्न हुआ। भुजाओं के समान बल-पराक्रमयुक्त क्षत्रिय वर्ण उत्पन्न किया। शरीर के मध्यभाग जंघाओं के समान कृषि-वाणिज्यादि गुणों से सम्पन्न वैश्य वर्ण उत्पन्न किया तो शरीर के सबसे नीचे भाग पग के समान शारीरिक श्रम के काम करने वाले शूद्र वर्ण पैदा किया।" यह मन्त्र प्रेम और सामाजिक एकता का पुनीत सन्देश देता है परन्तु महर्षि से पूर्व उलटी खोपड़ी वाले भाष्यकारों ने यह अनर्थ किया कि ईश्वर के मुख से ब्राह्मण, बाहों से क्षत्रिय, जंघाओं से वैश्य तथा पैरों से शूद्र उत्पन्न हुए। यह अर्थ तर्कहीन है व सामाजिक वैमनस्य तथा राष्ट्रीय पतन का मुख्य कारण बना।

मृतक श्राद्ध, मूर्ति पूजा, मांक्ष-भक्षण, अश्लीलता व इतिहासपरक अर्थ भी भाष्यकारों ने कर रखे थे। बुद्ध की तरह महर्षि भी इन अर्थों के आधार पर वेदविमुख हो सकते थे परन्तु अपने तप व स्वाध्याय के बल पर उन्होंने इन अर्थों के प्रति विद्रोह किया। बुद्ध की तरह वे नास्तिक नहीं बने। अपने नाम से नया सम्प्रदाय भी नहीं चलाया। उनके विचार

में मन्त्रों के अर्थों में जो सही लिखा है, वही ग्राह्य है तथा जो गलत है, वह त्याज्य है। इस आधार पर सभी पाखण्ड व अन्धविश्वास स्वत: गिर जाते हैं। उन्होंने दो नये शब्दों की स्थापना की–आर्ष तथा अनार्ष। अब तक संस्कृत का प्रत्येक वाक्य प्रामाणिक माना जाता था परन्तु महर्षि ने इसको अस्वीकार कर दिया। दूसरी खोज उन्होंने यह की कि वेद के सभी शब्द रूढ़ि न होकर यौगिक हैं। निरुक्तकार यास्क ऋषि की भी यही घोषणा थी। महर्षि ने किस प्रकार वेदमन्त्रों के अशुद्ध अर्थों को शुद्ध किया, इसका प्रमाण है–

वाचं ते शुन्धामि प्राणं ते शुन्धामि,
चक्षुस्ते शुन्धामि श्रोत्रं ते शुन्धामि।
नाभिं ते शुन्धामि मेढं ते शुन्धामि
पायुं ते शुन्धामि चरित्रांस्ते शुन्धामि॥ (यजु० 6.14)

उव्वट व महीधर के किये अर्थ=यजमान-पत्नी पशु के समीप बैठकर मरे पशु के प्राण के आयतन को शुद्ध करती है अर्थात् पात्रेजन पात्र से जल लेकर पशु के अंगों का स्पर्श करते हुए कहती है–हे पशु! मैं तेरे वागेन्द्रिय (=वाणी), प्राण, नेत्र, कान, मूत्रेन्द्रिय, मलेन्द्रिय तथा पैर आदि सब इन्द्रियों को शुद्ध करती हूँ।'' उनके अनुसार इस मन्त्र का देवता (=विषय) पशु है। यह कैसी बीभत्स शोधन है।

इस मन्त्र का अर्थ करते हुए महर्षि दयानन्द ने इसका देवता विद्वान् को माना है तथा जो अर्थ किया है, वह इस प्रकार है–''हे शिष्य! मैं विविध शिक्षाओं से तेरी वाणी को शुद्ध अर्थात् धर्मानुसार करता हूँ। तेरे नेत्रों को शुद्ध करता हूँ अर्थात् इनसे तुम वस्तुओं, व्यक्तियों को सही रूप में देखो व उचित व्यवहार करो। जिससे नाड़ी आदि बन्धे हैं, उस नाभि को पवित्र करता हूँ। जिससे मूत्रोत्सर्ग आदि किये जाते हैं, उस लिंग को पवित्र करता हूँ। जिससे तेरी रक्षा की जाती है, उस गुदेन्द्रिय को पवित्र करता हूँ। तेरे समस्त व्यवहारों को पवित्र, शुद्ध तथा धर्मानुसार करता हूँ। गुरुपत्नी के पक्ष में सर्वत्र 'करती हूँ' यह मानना चाहिए।''

इस मन्त्र में शिक्षा का उच्चादर्श वर्णित है। आचार्य का दायित्व केवल अक्षरज्ञान देना ही नहीं, अपितु शिष्य की समस्त इन्द्रियों में पवित्रता का आधान तथा व्यवहार की शुद्धि भी आचार्य का दायित्व है। निरुक्तकार यास्काचार्य ने भी '**आचार्यः कस्तादाचारं ग्राह्यति**' लिखकर आचार्य का कर्त्तव्य शिष्यों के आचार को उन्नत बनाना बताया है। यह भी ध्यान देने योग्य है कि मृत प्राणी के शरीर में गोलक ही रहते हैं, इन्द्रियां नहीं। बोलने से वाक्, जीवन देने से प्राण, देखने से चक्षु, सुनने से कान आदि अंग इन्द्रियां कहाती हैं। अन्यथा नहीं कहातीं। जब इनमें ये शक्तियां नहीं रहतीं, तब वे वाक्, प्राण, चक्षु व कानादि नहीं माने जाते। तब इनका शोधन कैसा? महर्षि ने इस मन्त्र को जीवितों से जोड़ा है, जो सर्वथा युक्त है। महर्षि ने वेद के मस्तक से हिंसा के कलंक को सर्वथा हटाया। विस्तारभय से अधिक प्रमाण देना उपयुक्त नहीं। जिन्हें अधिक प्रमाण चाहिए, उन्हें 'ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका' का स्वाध्याय करना चाहिए।

वेदों के प्रति महर्षि की श्रद्धा व साधनापूर्ण किया भाष्य अनुपम है। '**गड़रियों के गीतों**' का लेबल हटाकर इन्हें महर्षि ने, सर्वजनहितकारी, अत्यन्त ग्राह्य व पावन-पवित्र ईश्वरीय वाणी सिद्ध किया। महर्षि व्यास के शब्दों में '**नहि मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किञ्चित्**' अर्थात् मनुष्य से श्रेष्ठतर कुछ भी नहीं है, परन्तु महर्षि दयानन्द के विचार में श्रेष्ठतम मनुष्य को श्रेष्ठतम बनाने के लिए वेदज्ञान परम सहायक है। उनके भाष्य से ही ईश्वर, धर्म, आत्मा, प्रकृति तथा जगत् का पवित्र स्वरूप पुनर्स्थापित हुआ। वेदों में निहित रहस्यों व तत्त्वों को संसार के समक्ष शुद्ध रूप में रखकर उनके सम्बन्ध में व्याप्त अज्ञानान्धकार दूर करने का श्रेय अधिकांशत: ऋषि दयानन्द को ही जाता है। इस विषय में अरविन्द घोष का कथन उल्लेखनीय है–''वेदों का अन्तिम कथा पूर्ण प्रामाणिक भाष्य कोई भी क्यों न हो, दयानन्द का स्थान उपयुक्त शैली के प्रथम आविष्कारक के रूप में सर्वोच्च है। उसने अपनी दृष्टि से पुराने अज्ञान तथा भ्रम से सत्य का अन्वेषण किया। जिन वेदों के द्वार को समय ने बन्द-सा कर दिया था, उसकी चाबियों को उसने पा लिया था।'' लोकसभा के पूर्व अध्यक्ष अनंतशयम् अय्यंगार के शब्दों में ''महर्षि दयानन्द की सबसे बड़ी देन यह है कि अब प्रत्येक बात की सत्यता की परख के लिए वेद को ही प्रमाण माना जाता है।'' प्रसिद्ध आर्य कवि उदय सिंह ठाकुर के शब्द भी सच्ची बात कहते हैं–

वेद के भेद कहाँ खुलते अरु पुराणन की प्रति मोटी न होती।
गप्पों की ही तुलती तोल धड़ाधड़ खोटे-खरे की कसौटी न होती॥

क्रमशः अगले अंक में.....

गोरक्षा—एक यक्ष प्रश्न?

❑ सत्यप्रकाश आर्य, उपमंत्री, वेदप्रचार मण्डल, रेवाड़ी

यक्ष के प्रश्नों का उत्तर समय रहते महाराज युधिष्ठिर ने दे दिया था। परन्तु गोरक्षा का प्रश्न अभी तक अनुत्तरित है। गाय केवल एक उपयोगी पशु ही नहीं है, अपितु करोड़ों भारतवासियों के आस्था का प्रश्न है। प्राचीन काल से लेकर अब तक यह सत्य सनातन वैदिक धर्म में पूजनीय है। वैदिक कालखण्ड पर विहंगम दृष्टिपात करने से हमें विदित होता है कि गोमाता हमारे लिए कितनी उपयोगी है। **'ओ३म् गां मां हिंसी गावो भगो गाव इन्द्रो मे'** अर्थात् महाकल्याणकारी गोमाता को मत मारो, इसका दूध, गोबर व मूत्र हमारा भाग्य है।

पयः पशूना रसमोषधीनम्। (अथर्ववेद 19.31.5) अर्थात् स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन हेतु औषधियों का रस व गौ आदि पशुओं का दूध लेना चाहिए। वैदिक धर्म में स्पष्ट रूप से कहा गया है **"यदि नो गां हिंसी तन्त्वा सीसेन विध्याम्"** अर्थात् जो हमारी गाय को मारेगा हम उसका सिर विच्छेद कर देंगे।

गाय सदैव से आर्यावर्त देश की अर्थव्यवस्था की आधारशिला रही है। गाय से हमें जितनी गुणकारी व उपयोगी चीजें प्राप्त होती हैं, उतनी अन्य किसी प्राणी से प्राप्त नहीं हो सकती। विशेषतया कृषक वर्ग आदिकाल से ही गोपालक रहा है। आधुनिक युग में भी किसान बैल के कन्धे में सवा मन सोना और गाय में सवा मन स्वर्ण बता रहा है। वास्तव में यह आधारभूत सत्य है। औद्योगिक विकास के साथ बैल के कार्यों पर लगातर प्रश्नचिह्न लगते जा रहे हैं। यन्त्र-करत खेती ने बैल को खेत, खलिहान, गाड़ी, रथ, रहट व कोल्हू आदि कार्यों से निवृत्त कर दिया जिसके फलस्वरूप गाय के बछड़ों की अधोगति हो रही है। बैल रहित खेती ने गाय माता के निरादर का प्रमुख कारण है।

आधुनिक विज्ञान ने यह प्रमाणित कर दिया है कि गाय के पंचगव्य में स्वर्ण-कण विद्यमान है। पीली मिट्टी में गाय के गोबर को मिलाकर चूल्हे-चौके का लेपन करने की प्राचीन परम्परा रही है। इस लेपन में रेडियोधर्मी प्रभाव को रोकने की क्षमता विद्यमान है। इसी प्रकार जहरीले रेंगने वाले सर्प आदि इस लेपन पर नहीं आते और यदि किसी कारणवश इस लेपन पर आ जायें तो तीव्र गति से इसे पार कर लेते हैं। सर्पदंश स्थान को गोबर में दबाने से जहर का अधिकतर प्रभाव समाप्त हो जाता है। देशी गाय के शरीर पर जब व्यक्ति हाथ फेरता है तो गाय के रोंगटे में से ऑक्सीजन गैस का अवतरण होने लगता है। पशु-पालक के लम्बे व रोगरहित जीवन का रहस्य गाय के साथ निर्मल व्यवहार भी है।

गाय का वात्सल्य-प्रेम समस्त प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ है। तपती दोपहर में रेतीले भूभाग पर चलते हुए बन्दरी अपने बच्चे को नीचे गिराकर उस पर खड़ी हो जाती है ताकि उसके पैर न जले। ठीक इसके विपरीत गाय अपने बछड़ों को चारों पैर के बीच लेकर उस पर छाया करती है। सद्प्रसुता गाय अपने नवजात बच्चे के पास शेर को भी अपने जीते जी नहीं फटकने देती। किसी भी प्रकार की विपत्ति के समय दौड़ते हुए गाय अन्य प्राणियों का बचाव करते हुए दौड़ती हैं। समस्त सद्गुणों के पश्चात् भी इस मूक प्राणी का वध क्यों हो रहा है?

यवनों के आगमन से पूर्व इस देवधरा पर गोहत्या नहीं होती थी। गाय की मृत्यु के पश्चात् उस पर चादर चढ़ाकर व नमक डालकर जमीन में दबा दिया जाता था कि मृत शरीर की दुर्गति न हो और पर्यावरण ठीक रहे। हमारे धर्मग्रन्थों में जिसे भी अवसर प्राप्त हुआ उसी ने इनमें आक्षेप कर दिये। अविद्या व अन्धकार के कारण बिना सोचे समझे हमारे धर्म ठेकेदारों ने उन्हें स्वीकार कर लिया विदेशी शक्तियों ने हमारी सभ्यता व संस्कृति को जितनी हानि पहुँचाई उससे अधिक हानि स्वार्थवश हमारे अपने कहे जाने वाले लोगों ने पहुँचाई। बलिप्रथा को महिमा मण्डित कर बेजुबानों के कत्ल का द्वार खोल दिया गया। मांक्षभक्षण और शराब के चढ़ावे प्रचलित हो। सनातन धर्म की सब मान-मर्यादाएं सभ्यता और संस्कृति को तार-तार कर दिया गया। इस्लाम व ईसाइयत पर विश्वास रखने वाले समाज भी हलाल व हत्या कर निरीह पशु-पक्षियों का मांस भक्षण को धर्म विरुद्ध नहीं मानते। सत्य सनातन धर्म मांस भक्षण एवं शराब व अन्य मादक पदार्थों के सेवन को धर्म विरुद्ध आचरण मानता है। मुस्लिम समाज गोमांस का भक्षण सनातन धर्म में विश्वास रखने वाले लोगों की धार्मिक भावनाओं

को ठेस पहुँचाने के लिए करते हैं व ताजिए इनकी भावनाओं को भड़काने के लिए करते हैं। ईसाई समाज के लोग गाय के मांस की गुणवत्ता व पौष्टिकता का वर्णन विज्ञान के सहारे करते हैं और सनातनी समाज को मांस भक्षण के लिए प्रोत्साहित करते हैं। अंग्रेजों द्वारा हमारी धार्मिक भावनाओं को ध्वस्त करने के लिए कारतूसों पर गाय व सूअर के मांस का लेपन किया गया। कारतूसों पर यह लेपन सन् 1857 की जनक्रान्ति का आधार बना।

इतिहास गवाह है कि मध्ययुगीन भारत में मुस्लिम शासकों ने जजिया कर व गोहत्या पर प्रतिबन्ध करने के शासकीय आदेश केवल उसी समय लागू किये जब सनातन धर्म में विश्वास रखने वाले सेनापति और सैनिकों को किसी विजय अभियान पर भेजते थे।

अंग्रेजी शासन व्यवस्था में लार्ड क्लाईव ने सन् 1760 ई० में योजनाबद्ध कार्यक्रम के अन्तर्गत कलकत्ता में पहला बूचड़खाना खुलवाया। यह योजना क्रमबद्ध कार्ययोजना के अनुसार चलती रही। देवनार और अलकवीर की बड़ी कत्लगाहें सरकारी संरक्षण में निर्बाध रूप से चलने लगी। मुस्लिम लोगों के मन की मुराद पूरी हो रही थी। उनका मनचाहा काम और खाने को कबाब मिल गया।

अंग्रेजी शासन व्यवस्था ने जब समस्त पंजाब पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया उस समय लुधियाना शहर में एक कत्लगाह को लाईसेंस प्रदान कर दिया गया। इस आपदा के संकटकाल में नर-नाहर भाई रामसिंह निरंकारी पंथ के संस्थापक/संचालक ने इस कत्लगाह का बड़ी वीरता से विरोध किया। 17 जनवरी 1872 को निरंकारी समुदाय के सदस्य जिनको कूका नाम से संबोधित किया जाता था कत्लगाह को बन्द करवाने के लिए आगे बढ़े पुलिस ने उनको पकड़ लिया। कूकाओं का भारी जनसमूह पुलिस प्रशासन पर भारी पड़ने लगा। प्रशासन ने भय पैदा करने के लिए एक-एक कूके को तोप के मुंह पर बांधकर उड़ाना आरम्भ कर दिया। उस समय की स्थिति का वर्णन करने में लेखनी असमर्थ है। 80 कूकाओं ने अपना अमर बलिदान गोमाता की रक्षा के लिए देकर अंग्रेज प्रशासन को भयभीत कर दिया। बलिदानी कूकाओं की लाइन निरन्तर बढ़ती चली गई। बूचड़खाना बन्द हुआ। भाई रामसिंह पर नाममात्र का न्याय का स्वांग कर कालेपानी की सजा सुनाई गई। आर्यावर्त का प्रथम बहादुर गोरक्षक 13 साल घोर यातनाएं सहकर शहीद हो गया। हमारे देश के इतिहास में बहुत बड़े-बड़े बलिदानी हुए परन्तु गोमाता की रक्षा के लिए न इससे बड़ी कोई शहादत हुई और न कोई आन्दोलन उन सभी शहीदों को शत-शत नमन।

आर्यसमाज के संस्थापक ऋषिवर दयानन्द ने गोमाता को कत्लखानों से बचाने के लिए उस समय दो लाख व्यक्तियों के हस्ताक्षर युक्त एक ज्ञापन महारानी विक्टोरिया को प्रेषित किया था कि हमारे देश में गोमाता का कत्ल न किया जाए। हरयाणा की पावन धरा से भी गोमाता को बचाने के लिए तीन बार आन्दोलन किये गये। जिसमें आर्यसमाज व सनातन धर्म के साधु-संन्यासियों ने बड़ा भारी योगदान रहा। कुण्डली (सोनीपत) हरियाणा के बूचड़खाने को बन्द करवाने में स्वामी ओमानन्द सरस्वती गुरुकुल झज्जर का बड़ा भारी योगदान रहा। सभी आर्यसमाजों ने एकजुट होकर अपनी शक्ति का सदुपयोग किया और हरयाणा की पावन धरा गोहत्या के कलंक से मुक्त हो गई। इस सफल आन्दोलन से शिक्षा लेकर देशवासी एकजुट होकर भारतमाता को गोहत्या से मुक्त करने का संकल्प लें।

नोट—भाई रामसिंह का जन्म गाँव भैण जिला लुधियाना (पंजाब) में विश्वकर्मा कुलगौरव, रामगढ़िया मिशल के सरदार भाई जस्सासिंह रामगढ़िया के यहाँ हुआ था।

आर्यसमाज बड़ाबाजार (कोलकाता) का चुनाव

आर्यसमाज बड़ाबाजार का वार्षिक चुनाव रविवार दिनांक 11 मार्च, 2018 को सम्पन्न हुआ। नवनिर्वाचित पदाधिकारियों की सूची इस प्रकार है–

प्रधान–श्री दीनदयाल जी गुप्ता, मन्त्री–श्री आनन्ददेव आर्य, संयुक्त मंत्री–श्री जोगेन्द्र गुप्ता, कोषाध्यक्ष–श्री सज्जन बिन्दल।

–आनन्ददेव आर्य, मन्त्री आर्यसमाज

भूल-सुधार

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका के पाठकों को सूचित किया जाता है कि **'आर्य प्रतिनिधि'** पाक्षिक पत्रिका का वर्ष 13 अंक 24 जनवरी द्वितीय अंक में पूरा हो चुका था जो भूलवश वर्ष 13 अंक 25, 26, 27, 28 एवं 29 छप गया। अब 30 अप्रैल 2018 से इसका वर्ष 14 अंक 6 आपकी सेवा में प्रस्तुत है। इस असुविधा के लिए हमें खेद है।

–सम्पादक

श्रीयुत राजेन्द्र 'जिज्ञासु' एक विलक्षण व्यक्तित्व

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

क्या आप आज किसी ऐसे व्यक्तित्व को जानते हैं जो आर्यसमाज के धुरन्धर साधु विद्वानों यथा–स्वामी स्वतन्त्रानन्द, स्वामी वेदानन्द, स्वामी ज्ञानानन्द, महात्मा आनन्दस्वामी,

स्वामी सत्यप्रकाश, पं० रामचन्द्र देहलवी, पं० शान्तिप्रकाश, पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय, पं० नरेन्द्र आदि से न केवल घनिष्ठता से सम्पर्क में रहे अपितु आर्यसमाज के प्रति अपनी अगाध श्रद्धा, फील्ड कार्य, खोजपूर्ण उत्कृष्ट लेखन शैली के चलते इन सबकी हार्दिक प्रशंसा प्राप्त की? जी हाँ, हम यहाँ बात कर रहे हैं 87 वर्षीय वयोवृद्ध, ज्ञानवृद्ध, आर्यसमाज के इतिहास शिरोमणि, 'वेद सदन' नई सूरज नगरी अबोहर (पंजाब) में रह रहे श्रीयुत राजेन्द्र 'जिज्ञासु' की। इनके बारे में कभी महान् तत्त्ववेत्ता डॉ० स्वामी सत्यप्रकाश जी ने बड़ी सटीक टिप्पणी की थी। उस समय जब ये उनसे मिलने गए तो उनके पास स्वामी श्रद्धानन्द के दोहते श्री सत्यकाम् विद्यालंकार बैठे हुए थे। उस समय श्री सत्यकाम जी को इनका परिचय देते हुए स्वामी जी ने कहा था, ''ये हैं श्री राजेन्द्र 'जिज्ञासु', ये हमारे बारे में वे बातें जानते हैं, जो हमें अपने बारे में स्वयं भी नहीं पता।''

यह एक सिद्ध बात है कि महापुरुषों के जीवन का अध्ययन हमारे स्वयं के जीवन को उत्कृष्ट बना देता है। उन्होंने जहाँ महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, धर्मवीर पंडित लेखराम, पं० गुरुदत्त विद्यार्थी के जीवन का विभिन्न भाषा के ग्रन्थों, पत्रों से न केवल बारीकी से अध्ययन किया अपितु इन पर खोजपूर्ण ग्रन्थ स्वयं भी लिखे व लिख रहे हैं, वहीं इस लेख के आरम्भ में हमने जिन महापुरुषों का उल्लेख किया है, उनसे स्वयं साक्षात्कार कर इन्होंने स्वयं के व अन्य के जीवन निर्माण के मोती ग्रहण किये, जिसका उदाहरण इनके द्वारा लिखी लघु पुस्तिका 'बड़ों की बड़ी बातें' हैं। आर्यसमाज का कार्य श्रद्धा व तप साध्य है। जब भी हम श्रद्धा में स्वार्थ व अज्ञान जोड़ देते हैं तो हम अपनी कार्यशैली को बिगाड़ देते हैं। कोई हमें श्रद्धा के नाम पर ठग न ले, हमारी कार्यशैली कहीं संगठन के लिए घातक न बन जाए, इस हेतु सावधानी की आवश्यकता है। यदि स्वयं आर्यसमाज के इतिहास के उदाहरणों द्वारा इस विषय को समझना चाहते हैं तो इनके द्वारा लिखी 'स्मृतियों की यात्रा' से बढ़िया पुस्तक आपको कहाँ मिलेगी? सच्ची श्रद्धा से ही कार्यसिद्धि के लिए तड़प उत्पन्न होती है, तप से श्रद्धालु सत्य के मार्ग पर चलता है। ऐसे तड़प वालों की कहानी आप 'तड़पवाले तड़पाती जिनकी कहानी' में पढ़ सकते हैं। 'गंगाज्ञानधारा', 'भूमण्डल प्रचारक मेहता जैमिनि', 'कविर्मनीषी पंडित चमूपति' आदि पुस्तकें स्वाध्यायशील, फील्ड में कार्य करने वाले आर्य युवाओं के लिए नए सोपान प्रदान करने वाली हैं जो उन्हें अन्यत्र नहीं मिलेगी।

यहाँ मेरी तो आपसे प्रार्थना रहेगी कि प्रकाशक या पुस्तक विक्रेता की अपेक्षा इनके साहित्य के लिए आप स्वयं इनसे ही चलभाष नं० 9417647133 पर सम्पर्क करें। यह इसलिए कि एक उच्चकोटि के आर्यसमाज के इतिहास शिरोमणि साधक के प्रति अपनी श्रद्धा की आंशिक आहुति डालकर आप जहाँ सन्तुष्टि अनुभव करेंगे वहीं ऐसे व्यक्तित्व से आत्मीयता का सम्बन्ध स्थापित होने से आत्मगौरव की भी प्राप्ति होगी। इनसे फोन पर बात करो या मिलो इनसे मिलो, आपको ऐसा लगेगा कि ये भी आपसे मिलना चाहते हैं, आपको जानना चाहते हैं, आपको प्रेरित व प्रोत्साहित करना चाहते हैं। यही एक मिशनरी की विशेषता होती है। दूसरी ओर अनेक विद्वान्, उपदेशक ऐसे भी मिलते हैं जिनसे मिलकर आपको लगेगा कि आपको किसी पत्थर से मिल रहे हैं, उनके बारे में तो हम यही कहेंगे, ''नाम बड़े व दर्शन छोटे।'' मिशनरी होने के कारण ही आप देश के हर कोने में तथ्यों की खोज में सात दशक से न केवल घूमे हैं, अपितु व्याख्या दिए हैं, कार्यकर्त्ताओं से मिले हैं, नए कार्यकर्त्ता तैयार किये हैं।

हम यहाँ यह बात जोर देकर कहना चाहेंगे कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की श्रद्धायुक्त आँखें स्वामी श्रद्धानन्द जैसे नेताओं के साथ ही चली गई। ये श्रद्धायुक्त आँखें होती तो उन्हें 'जिज्ञासु' अवश्य दिखाई देते और अनेक श्रद्धायुक्त

क्रमशः पृष्ठ 16 पर......

महर्षि दयानन्द जीवन-चरित्र (भूमिका)

❑ सूबेदार करतारसिंह आर्य, सेवक आर्यसमाज गोहानामण्डी (सोनीपत)

शायद यह बात बहुत से लोगों को ज्ञात नहीं होगी कि स्वामी दयानन्द को बहुत स्थानों में और बहुत बार मूर्तिपूजा का खण्डन छोड़ने के लिए अनुरोध किया गया

और उन्हें प्रलोभन तक दिये गये। सन् 1877 में जब वे लाहौर में ठहरे हुए थे और उन्होंने पंजाब में प्रबल आन्दोलन उपस्थित कर रखा था, तब काश्मीरपति महाराजा रणवीर सिंह ने पंडित मनफूल द्वारा स्वामी जी से अनुरोध किया था कि आप जो कुछ और कार्य कर रहे हैं किये जायें, परन्तु मूर्तिपूजा के विरोध में कुछ न कहें। यदि आप ऐसा करें तो मैं अपना धनागार आपको समर्पण कर दूंगा, परन्तु दयानन्द ने इसका क्या उत्तर दिया? उन्होंने पंडित मनफूल से कहा कि ''मैं वेदप्रतिपादित ब्रह्म को सन्तुष्ट करूँगा, न कि काश्मीरपति को। आप ऐसी बात मेरे सामने न कहिये।'' सन् 1869 ई० में जब काशी में महाशास्त्रार्थ के कारण चारों ओर महान् आन्दोलन हो रहा था, काशी का एक प्रसिद्ध पण्डित एक दिन, रात्रि के समय दयानन्द के पास आया और प्रार्थना करने लगा-''यदि आप अन्य सब बातों का खण्डन करें किन्तु एक मूर्तिपूजा का खण्डन न करें तो काशी की समस्त पण्डित मण्डली एकत्र होकर आपके गले में जयमाला पहनायेगी और आपको हाथी पर सवार कराकर आपकी सवारी सारे नगर में निकालेगी और आपको हिन्दुओं का अन्यतम अवतार मान लेगी।'' इसके उत्तर में दयानन्द ने कहा-''मैं यह कुछ नहीं जानता, मैं तो वेदप्रतिपादित सत्य के प्रचार के लिये आया हूँ।'' पण्डित जी यह सुनकर चुप हो गये और उठकर चले गये। ऐसा कहा जाता है कि दिल्ली के निकटवर्ती किसी स्थान का एक सेठ झकड़े में एक लाख रुपया भरकर स्वामी जी के पास लाया और विनयपूर्वक उनसे बोला-''महाराज! मैं यह आपकी भेंट करता हूँ, आप मूर्तिपूजा खण्डन की बात जाने दीजिए। इसके लिए जो कुछ आप कहना चाहें कहते रहिए। मैं यह लाख रुपया आपके कार्यों के सहायतार्थ देता हूँ।'' उस सेठ के इस अनुरोध को देख स्वामी जी हँसने लगे और उस सेठ से केवल इतना कहा-''सेठ जी! आप यहाँ से चले जाइये।'' मूर्तिपूजा का प्रतिवाद करने में स्वामी जी इतने निर्भय, इतने साहसी और इतने पराक्रमी पुरुष थे कि जिस देव मन्दिर में विश्राम करते थे उसी के देवमूर्ति का खण्डन करने को उद्यत हो जाते थे। स्वामी जी अति सरल, उज्ज्वल और समीचीन भाव से प्रतिपादित किया करते थे। मूर्तिपूजा के समान कोई महा मिथ्या वस्तु नहीं है। काशी शास्त्रार्थ में उनका प्रथम प्रधान पक्ष ही यह था कि-पाषाणादि मूर्तिपूजा वेदविरुद्ध है। पूना के शास्त्रियों के साथ भी उनका प्रधान विचारणीय विषय था कि ''मूर्तिपूजा मिथ्या है।''

सारांश यह है कि घोरतम प्रतिकूलताओं के होने, घोरतम प्रलोभनों के दिये जाने और समय पर शत्रुओं के हाथों अपने प्राण-नाश के यत्न किये जाने पर भी मूर्तिपूजा के विरुद्ध प्रचण्ड संग्राम उपस्थित करके उन्होंने भारत की आचार्य मण्डली में अपने लिए विशेष स्थान बना लिया है। इसमें अणुमात्र भी संशय नहीं है कि इस पक्ष में वह अतुल्य, अनुपम और अद्वितीय थे। जैसे मूर्तिपूजा आर्यसंस्कृति की प्रधानतम वैरिणी है, वैसे ही मूर्तिपूजा के प्रधानतम वैरी थे। उन्होंने समस्त भारतभूमि अति उज्ज्वल व प्रबल भाव से इस बात का प्रचार किया कि जब तक मूर्तिपूजा समूल नष्ट नहीं होगी तब तक भारतभूमि का कोई भी कल्याण साधित नहीं हो सकता। इस प्रकार दयानन्द ने जैसी अपनी अपूर्वता और विशेषता की है वैसे इस देश का भी विशेष उपकार किया है। इसलिये ऐसे महात्मा के विकल जीवन वृत्तान्त को भारत की विविध भाषाओं में प्रकाशित करने के यत्न का यह दूसरा हेतु है।

मनुष्य! यदि तू शान्ति का इच्छुक है तो तुझे आर्षज्ञान की महिमा समझनी होगी और आर्षज्ञान की महिमा समझने के लिए तुझे दयानन्द को भी समझना होगा।

साभार-श्री देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय

स्वस्थ एवं सुखी रहने के सूत्र

- अनावश्यक आराम छोड़ दो, शरीर को आवश्यकता से अधिक आराम मत दो। 6-7 घण्टे आराम काफी है। इससे अधिक आराम करना डायबिटीज (शुगर) को जान-बूझकर बुलावा देना है।
- भविष्य में आने वाले बड़े दु:खों से बचना है तो वर्तमान के छोटे-छोटे सुखों को छोड़ दो। अर्थात् चार-पांच बजे बिस्तर छोड़कर दिनचर्या आरम्भ कर दो। आलस्यवश बिस्तर में पड़े रहना भविष्य में बीमारी मोल लेने की तैयारी करना है। विद्वानों का कथन है कि चार बजे के पीछे सोना, है इस जीवन को खोना, झट शैय्या को त्याग अमृत बरस रहा है।
- प्रात: उठते ही बिना कुल्ला किये डेढ़-दो गिलास गुनगुना पानी बैठकर घूंट-घूंटकर पी जाओ। इससे मुंह में जो लार है जो रात में बनी है वह अधिकतम पेट में जाएगी जो कि शरीर के लिए बहुत लाभकारी है।
- **'भोजनान्ते विषं वारि'** भोजन करने के तुरन्त बाद पानी पीना जहर पीना है। भोजन करने के डेढ़ घंटा बाद पानी पीओ। प्रकृति का नियम है ज्यों ही आमाशय में भोजन जाना शुरू होता है, जठराग्नि प्रदीप्त हो जाती है, जो कि भोजन को पचाती है। पानी पीने से वह अग्नि बुझ जाती है। अब भोजन पकेगा नहीं, बल्कि सड़ेगा। भोजन पचने से रस, रक्त, मांस, अस्थि, मज्जा, वीर्य, ओज बनते हैं। भोजन सड़ने से गैस, अम्ल, पित्त, कफ बनते हैं।
- भोजन करते समय भोजन का स्वाद मत देखो, भोजन की गुणवत्ता देखो। जीभ छह इंच की है, शरीर छह फुट का है।
- दांतों का काम आंतों से मत लो। अर्थात् भोजन को चबा-चबाकर खाओ।
- बिना भूख भोजन मत करो। भूख लगने पर ही भोजन करो। भूख के लिए आयु के अनुसार शारीरिक श्रम अवश्य करो।
- यदि सुखी रहना है तो अच्छे काम इच्छा न होते हुए भी करो। बुरे काम इच्छा होते हुए भी मत करो।
- तन को शुभ कर्मों में लगाये रखो, मन को ईश्वर में लगाए रखो। आपका जीवन सफल हो जाएगा।
- योगाभ्यास (आसन, प्राणायाम) प्रतिदिन आधा घंटा कम से कम अवश्य करो। आसन करने से स्थूल शरीर मजबूत होता है। प्राणायाम से सूक्ष्म शरीर मजबूत होता है। योग स्वस्थ व्यक्ति के लिए जीवन पद्धति है, रोगी के लिए उपचार पद्धति है, साधक के लिए साधना पद्धति है।

संकलनकर्त्ता-केवलसिंह आर्य, सेवानिवृत्त सहायक अभियन्ता, योग शिक्षक, थर्मल कॉलोनी, पानीपत।

सार्वदेशिक आर्यवीर दल का राष्ट्रीय शिविर

4 जून से 17 जून, 2018

स्थान–गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, फरीदाबाद

आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सहयोग से आयोजित शिविर में सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान संचालक स्वामी देवव्रत सरस्वती की अध्यक्षता में शाखानायक, उपव्यायाम शिक्षक, व्यायाम शिक्षक श्रेणी का शारीरिक एवं बौद्धिक प्रशिक्षण सुयोग्य शिक्षकों द्वारा दिया जायेगा। प्रवेशार्थी आर्य वीर दल या आर्यसमाज के अधिकारी का संस्तुति पत्र, 2 फोटो एवं पहले उत्तीर्ण परीक्षा के प्रमाण पत्र की प्रतिलिपि साथ लेकर आयें। शिविर के अनुशासन का पूर्णत: पालन करना होगा। अनुशासन भंग करने पर शिविरार्थी को शिविर से पृथक् भी किया जा सकता है। प्रवेश शुल्क 500/- रुपये पाठ्य पुस्तकें शिविर की ओर से दी जायेंगी।

नोट–

1. शिविर में प्रवेश आर्यवीर श्रेणी उत्तीर्ण को ही दिया जायेगा। शिविरार्थी की योग्यता मैट्रिक उत्तीर्ण होनी चाहिए। शिविर में प्रथम श्रेणी को प्रवेश नहींमिलेगा।
2. शिविर में सन्ध्या-यज्ञ एवं प्राथमिक चिकित्सा तथा व्यक्तित्व विकास का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया जाएगा।

मार्ग–नई दिल्ली, पुरानी दिल्ली से मैट्रो द्वारा सराय उतरें। बस द्वारा बदरपुर, सराय से रेलवे फाटक पार कर गुरुकुल पहुँचें।

–आचार्य ऋषिपाल, शिविर संयोजक, 9811687124

समाचार-प्रभाग

योग-ध्यान, साधना शिविर सम्पन्न

जम्मू काश्मीर की सुरम्य एवं मनोरम पहाड़ियों में स्थित आनन्दधाम आश्रम (गढ़ी आश्रम) ऊधमपुर, जम्मू काश्मीर में आश्रम के मुख्य संरक्षक एवं निदेशक पूज्य महात्मा चैतन्य स्वामी जी की अध्यक्षता एवं पूज्य मां सत्यप्रियायतिजी के सान्निध्य में दिनांक 8 से 15 अप्रैल-2018 तक निःशुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया गया जिसमें राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, जम्मू काश्मीर, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात, दिल्ली, मध्यप्रदेश, उत्तराखंड तथा उड़ीसा आदि राज्यों से आए हुए लगभग एक सौ शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविर में लगभग सोलह वानप्रस्थी व संन्यासी भी पधारे। शिविर में अनुभवी आचार्यों एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि का क्रियात्मक अभ्यास कराया गया। इस अवसर पर मां सत्यप्रियायति जी के तथा अन्य गायक-गायिकाओं के भजन हुए। महात्मा जी के सारगर्भित वैदिक प्रवचन हुए। वैदिक प्रवक्ता श्री अखिलेश भारतीय जी के उपनिषद् एवं सन्ध्या पर हुए प्रवचन अत्यन्त प्रभावशाली रहे। इस अवसर पर पूज्य महात्मा जी के ब्रह्मत्व में सामवेद परायाण यज्ञ भी सम्पन्न हुआ। सेवानिवृत, मुख्य सचिव श्री कुण्डल, जम्मू काश्मीर विधान सभा के अध्यक्ष श्री कवीन्द्र जी तथा स्थानीय विधायक श्री पवन आदि की गरिमामयी उपस्थिति भी रही।

आचार्य चैतन्य जी को साहित्य सम्मान

भुट्टि वीवर्ज कोआप्रेटिव सोसाइटी संस्था के संस्थापक स्वर्गीय श्री वेदराम ठाकुर जी की स्मृति में संस्था शालोद्योग, सहकारिता और साहित्य एवं समाजसेवा के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कार्य करने वाले महानुभावों को पुरस्कृत एवं सम्मानित करती है। इस बार समिति द्वारा 'ठाकुर मौलूराम जीवन्त पहाड़ी भाषा एवं संस्कृति राष्ट्रीय सम्मान' के लिए वरिष्ठ साहित्यकार एवं वैदिक प्रवक्ता आचार्य भगवानदेव 'चैतन्य' जी को चुना गया है। उल्लेखनीय है कि आचार्य जी की अब तक लगभग सत्तर साहित्यिक एवं आध्यात्मिक रचनाएं प्रकाशित हो चुके हैं तथा अब तक साहित्य अकादमी सहित बीसियों पुरस्कारों से सम्मानित हो चुके हैं। आचार्य जी ने एक प्रभावशाली एवं लोकप्रिय वैदिक प्रवक्ता के रूप में भी यश प्राप्त किया है। उन्हें यह सम्मान एक अन्तर्राष्ट्रीय भव्य समारोह में प्रदान किया जाएगा।

महात्मा चैतन्य स्वामी एवं मां सत्यप्रियायति जी सम्मानित

डी.ए.वी. प्रबन्धक समिति, नई दिल्ली द्वारा प्रतिवर्ष महात्मा हंसराज जी के जन्मदिवस के अवसर पर वैदिक धर्म के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कार्य करने वाले संन्यासियों एवं महात्माओं को सम्मानित किया जाता है। इस वर्ष अन्य विद्वानों के साथ-साथ महात्मा चैतन्य स्वामी एवं मां सत्यप्रियायति जी को भी चंडीगढ़ में एक भव्य समारोह में सम्मानित किया गया। उल्लेखनीय है कि महात्मा जी एवं यति जी ने पूर्ण समर्पित भाव से वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में अपना जीवन समर्पित किया हुआ है तथा अनेक आश्रमों का कार्य भी देख रहे हैं। महात्मा जी वरिष्ठ साहित्यकार एवं लोकप्रिय एवं सैद्धान्तिक वैदिक प्रवक्ता के रूप में भी जाने जाते हैं। महात्मा जी एवं यति जी ने डी.ए.वी. के स्कूलों, बी.एड. तथा अन्य कॉलेजों में अनेक छात्र एवं छात्राओं के वैदिक चेतना शिविर लगाए हैं। इन्होंने अध्यापकों, धर्माचार्यों एवं प्राध्यापकों के भी अनेक वैदिक चेतना शिविर लगाए हैं। अनेक वर्षों से ये इस प्रकार के सार्थक शिविरों में प्रशिक्षण देकर छात्र-छात्राओं तथा शिक्षकों को वैदिक मान्यताओं के संस्कारों से कृतार्थ करते हैं।

-भारतभूषण आनन्द, आश्रम प्रधान।

स्थापना दिवस का आयोजन

आर्यसमाज, गोकर्ण मार्ग, रूपनगर, रोहतक के 'स्थापना दिवस' पर ज्येष्ठ कृष्ण एकादशी से ज्येष्ठ कृष्ण त्रयोदशी सम्वत् 2075 तदनुसार शुक्रवार 11 मई से रविवार 13 मई 2018 तक तीन दिन का वेदप्रचार का कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है जिसमें श्री शिवकुमार शास्त्री जी, वैदिक प्रवक्ता, सहारनपुर उत्तर प्रदेश तथा आर्यजगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री प्रताप सिंह जी आर्य सहारनपुर उत्तर प्रदेश पधार रहे हैं।

कार्यक्रम

शुक्रवार 11 मई से रविवार 13 मई 2018 तक

यज्ञ, भजन एवं उपदेश प्रातः 7.00 बजे से 10.30 बजे तक

भजन एवं प्रवचन रात्रि 7.30 बजे से 10.00 बजे तक

आप सभी इस कार्यक्रम में परिवार एवं इष्ट मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक–लक्ष्मण आर्य, मंत्री, चल-दूरभाष-9466448668

आर्यसमाज बरौली का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज बरौली तहसील नारायणगढ़ जिला अम्बाला का वार्षिक उत्सव दिनांक 30, 31 मार्च व 1 अप्रैल 2018 को आर्यसमाज मन्दिर बरौली के प्रांगण में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। उत्सव में आर्य भजनोपदेशक घनश्याम प्रेमी व भूपेन्द्र सिंह प्रेमी ने भजनों के माध्यम से वैदिक धर्म प्रचार किया जिसमें ईश्वरभक्ति, पाखण्ड-खण्डन व देशभक्ति आदि अनेक विषयों पर प्रकाश डाला गया। मेरठ से पहुँचे स्वामी चन्द्रदेव जी के वैदिक प्रवचन हुए। वेद की ईश्वरीय ज्ञान है, धर्म किसे कहते हैं? मनुष्य किसे कहते हैं? आदि विषयों पर विस्तृत व्याख्यान हुए। काफी संख्या में लोग सुनने को आते थे। प्रतिदिन सुबह भी हवन व उपदेश कार्यक्रम किया जाता था। इस कार्य में वेदप्रचार मण्डल अम्बाला का भी सहयोग रहा है।

आर्यसमाज हुसैनी का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज हुसैनी तहसील नारायणगढ़ जिला अम्बाला का वार्षिक उत्सव दिनांक 3, 4 व 5 अप्रैल 2018 को आर्यसमाज मन्दिर हुसैनी के प्रांगण में बड़ी धूमधाम व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। उत्सव में आर्य भजनोपदेशक दिनेश जी दिल्ली से पधारे और भजनों के माध्यम से महर्षि दयानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डाला। समाज में फैली कुरीतियों व अन्धविश्वास से बचने का आग्रह किया। ईश्वरभक्ति के साथ-साथ देशभक्ति के भजनों के माध्यम से लोगों को जागृत किया। सोनीपत से पधारे स्वामी ध्रुवानन्द जी के बड़े मार्मिक वैदिक व्याख्यान हुए। हमें अपने भीतर के शत्रुओं काम, क्रोध, ईर्ष्या आदि का दमन करना चाहिए। कथनी व करनी में अन्तर नहीं होना चाहिए व वेदों के विषय में कई विषयों पर प्रकाश डाला। हर रोज सुबह हवन किया जाता था व भजन तथा उपदेश का कार्य किया जाता रहा। काफी संख्या में लोग उपदेश सुनने आते थे। इस कार्य में वेदप्रचार मण्डल अम्बाला का भी सहयोग रहा है।

–रघुवीर सिंह, अन्तरंग सदस्य, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

दिनांक 1.10.2017 से वर्षपर्यन्त लगातार प्रतिदिन 12 घण्टे चलने वाला 'अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र' आयोजित सर्वकल्याण धर्मार्थ न्यास (पंजी.) पानीपत द्वारा

सर्वकल्याण धर्मार्थ न्यास (पंजी.) पानीपत के अध्यक्ष **महात्मा वेदपाल आर्य** जी द्वारा आयोजित वर्ष भर लगातार प्रतिदिन 12 घण्टे (सूर्योदय से सूर्यास्त तक) चलने वाला दिव्य '**अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र**' आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् योगनिष्ठ, मनीषी, लेखक, वक्ता एवं विश्व-विख्यात वेद प्रचारक **स्मृति शेष पूज्य आचार्य श्री ज्ञानेश्वर जी, रोजड़ (गुजरात)** की प्रेरणा, सहयोग, आशीर्वाद, उन्हीं द्वारा शुभारम्भ व उन्हीं के निर्देशन में 1.10.2017 से नियमित रूप से पूरे दिन **आर्यसमाज मन्दिर बसई, गुरुग्राम (हरयाणा)** में चल रहा है। जो **30.09.2018** तक अनवरत जारी रहेगा। **फरवरी 2018** में इस आयोजन के **पांच मास** पूरे हो चुके हैं। ईश्वर की महती कृपा से एवं श्रद्धालुओं के सहयोग व आशीर्वाद से बिना किसी बाधा के यह कार्यक्रम लगातार आगे बढ़ रहा है। प्रतिदिन लगभग 60-70 महिलाएं, पुरुष एवं विद्यार्थियों का आना जाना लगा रहता है। कई बार तो 100-125 की संख्या भी हो जाती है। इस केन्द्र में व्यक्ति स्वयं आकर अपना व परिवार के सदस्यों का जन्म दिवस व विवाह वर्षगांठ मनाने आ रहे हैं। यज्ञ सीखने के लिए भी श्रद्धालु आते रहते हैं। हरयाणा की चारों दिशाओं से व अन्य राज्यों के श्रद्धालु महिलाएं, पुरुष अपनी-अपनी श्रद्धा की आहुति प्रदान करने आ रहे हैं। यहाँ बड़ी चहल-पहल रहती है। कई बार तो मेला-सा लग जाता है। यज्ञ की सभी प्रकार की व्यवस्थाएं एवं प्रशिक्षण आदि प्रातः से सायं तक यज्ञ प्रभारी आदरणीय **आचार्य श्री सन्तराम आर्य** दयानन्दमठ, रोहतक अपने नियंत्रण में चलाकर लगातार सेवा दे रहे हैं।

–आर्य सुरेन्द्रसिंह तोमर, संयोजक, प्रबन्धक समिति
'**अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र**' सर्वकल्याण धर्मार्थ न्यास
(पंजी.) पानीपत मो० 9811817474, 9311817474

महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुयायी धर्मवीर पंडित लेखराम आर्य का अमर बलिदान

आर्यसमाज के प्रमुख प्रचारक पंडित लेखराम आर्य का इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में नाम अंकित है। उन्होंने अपना सारा जीवन आर्यसमाज के सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में लगा दिया। उन्होंने अहमदिया मुस्लिम समुदाय के नेता मिर्जा गुलाम अहमद को शास्त्रार्थ में पराजित करके विशेष प्रसिद्धि प्राप्त की। उन्होंने तहरीर और तकरीर पर विशेष बल दिया। तहरीर से अभिप्राय लेखन से है तकरीर से अभिप्राय शास्त्रार्थ से है।

पण्डित धर्मवीर लेखराम आर्य का जन्म 1855 ई० में पाकिस्तान में जेहलम जिला की तहसील चकवाल में सैदपुर गाँव में हुआ। पिता का नाम तारासिंह और माता का नाम भागभरी था। पाठशाला में उर्दू-फारसी भाषा पढ़ी। 1875 ई० में वह पेशावर में पुलिस में भर्ती हो गए। धीरे-धीरे उन्नति करते हुए सारजेंट बन गए। मुंशी कन्हैयालाल अलखधारी की पुस्तकों के अध्ययन करते-करते उनके मन में महर्षि दयानन्द सरस्वती से भेंट करने की इच्छा जागृत हो गई। वह पेशावर से चलकर अजमेर पहुँचे। यहाँ महर्षि जी से भेंट की। पहली भेंट ने उनके हृदय में परिवर्तन ला दिया। 1884 ई० में पुलिस की नौकरी से त्यागपत्र देकर आर्यसमाज के सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में लग गए।

पेशावर में आर्यसमाज की स्थापना की। घर परिवार को त्यागकर वह स्वामी दयानन्द सरस्वती के समान गांव-गांव जाकर मूर्तिपूजा एवं अन्य बुराइयों का खण्डन करने लगे। ईसाई एवं मुस्लिम उनके प्राणों के प्यासे बन गए। क्योंकि शुद्धि आन्दोलन के तूफान ने आर्यसमाज की नींव को मजबूत कर दिया था। जहाँ-जहाँ पण्डित लेखराम जी के प्रवचन होते, सैकड़ों लोग उनके दर्शनों को पहुँचते।

3 मार्च 1897 ई० को ईद के दिन डेरा गाजीखान में उनकी हत्या कर दी गई।

–कृष्ण वोहरा, सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, सिरसा (हरयाणा)

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक समाचार पत्र में विज्ञापन देकर लाभ उठायें।

अमर हुतात्मा महाशय...... पृष्ठ 5 का शेष.......

जाने के उपरान्त शिमला में मुझे मालवीय जी मिले।' उन्होंने मुझसे पूछा, 'राजपाल ने उस पुस्तक के लेखक का नाम बतलाया या नहीं।' मैंने कहा, 'न अभियोग में, न पहली बार आक्रमण होने पर। अर्थात् मरण तक किसी को यह नहीं बतलाया कि इस पुस्तक का लेखक कौन है?' इस पर मालवीय जी ने कहा, 'वे बड़े महान् आत्मा थे, जान दे सकते थे परन्तु किए प्रण को जीवन भर निभाते रहे।'

महाशय जी के बलिदान का प्रभाव-महाशय राजपाल ने धर्महित में अपना बलिदान देकर आर्य जाति में एक ऐसे नवजीवन का संचार कर दिया जिसको कभी भुलाया नहीं जा सकता। पूरे जगत् का सिर गौरव से ऊपर उठ गया है। महाशय जी का बलिदान हिन्दू मात्र के लिए कितना महत्त्वपूर्ण व प्रेरणाप्रद था इसका पता इस बात से चलता है कि उनके बलिदान के 10 वर्ष बाद तक पंजाब, सीमा प्रान्त, जम्मू-कश्मीर, हरयाणा, दिल्ली, राजस्थान व उत्तर प्रदेश मेंभी सैकड़ों हिन्दू परिवारों ने अपने नवजात पुत्रों को 'राजपाल' नाम देकर अपने को गौरवान्वित माना।

पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी..... पृष्ठ 2 का शेष.....

उद्देश्य वैदिक धर्म का अभ्युदय, सामाजिक सुधार व देश सुधार, अविद्या का नाश व विद्या की वृद्धि, लोगों को ज्ञानी बनाकर देश व विश्व से सभी प्रकार के अज्ञान व अन्धविश्वासों को दूर करना आदि था। वह अपने समय के सबसे कम आयु के अजेय धार्मिक योद्धा थे। उनके कार्यों से वैदिक धर्म का संवर्धन हुआ जिसके लिए देश और समाज उनका ऋणी है।

पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी के दो अंग्रेजी लेख (वैदिक संज्ञा विज्ञान) तथा (वैदिक संज्ञा विज्ञान व यूरोप के विद्वान्) को ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में शामिल किया गया था। क्षय रोग के कारण 19 मार्च, 1890 को महज 26 वर्ष की आयु में उनका देहान्त हो गया, किन्तु उतने ही समय में उन्होंने अपनी विद्वत्ता की छाप छोड़ी और अनेकानेक विद्वत्तापूर्ण ग्रन्थों की रचना की। परिवार में उनकी माता, पत्नी व दो छोटे पुत्र थे। पण्डित जी की मृत्यु पर न केवल आर्यसमाज के नेताओं ने अपितु अनेक मतों के विद्वानों ने भी उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए शोक प्रकट किया था। (साभार-भारतकोष)

कार्यकारिणी सभा का चुनाव

जींद, आर्यसमाज रेलवे रोड, जींद की कार्यकारिणी सभा का चुनाव रविवार को प्रात: यज्ञ व सत्संग के बाद सर्वसम्मति से सम्पन्न हो गया। माता सुमित्रा देवी की अध्यक्षता में आयोज़ित आम सभा में ध्वनि मत से वर्तमान कार्यकारिणी को ही आगामी तीन वर्षीय अवधि के लिये चुना गया। पिछली कार्यावधि में पारदर्शी रूप से भवन निर्माण कार्य व अन्य सामाजिक गतिविधियों में उत्कृष्ट योगदान की सराहना करते हुए मा० सतबीर जुलानी को प्रधान, रामनिवास आर्य को उपप्रधान, मा० पृथ्वीसिंह मोर को महामंत्री व महासिंह नैन को कोषाध्यक्ष का कार्यभार सौंपा गया। शेष कार्यकारिणी अंतरंग सभा भी पूर्ववत् रहेगी। इससे पूर्व आयोजित सत्संग में श्री सूरजमल आर्य, सत्यवान शास्त्री व डॉ० रणजीत सिंह ने अपने विचार प्रकट किये। श्रीमती सुमन मान ने वैदिक विधि से यज्ञ सम्पन्न कराया। नवचयनित प्रधान मास्टर सतबीर व महामंत्री मास्टर पृथ्वीसिंह ने सभी सदस्यों का आभार प्रकट करते हुए कहा कि आर्यसमाज सामाजिक समरसता, पर्यावरण के लिये पूर्ण शक्ति के साथ काम करता रहेगा। समाज में व्याप्त कुरीतियों जातिवाद, अंधविश्वास व पाखण्ड के उन्मूलन के लिए वेद प्रचार के कार्यक्रमों को गति दी जायेगी।

–सहदेव शास्त्री, प्रैस प्रवक्ता एवं उपमंत्री, आर्यसमाज जींद जंक्शन, 9416253826

सीमन्तोनयन संस्कार सम्पन्न

दिनांक 25 मार्च, 2018 को प्रिंसिपल श्री बलगानन्द गोहाना जिला सोनीपत में सीमन्तोनयन संस्कार सम्पन्न हुआ। संस्कार यज्ञ में आचार्य वेदमित्र जी व डॉ. देशवाल जी ने गर्भ में बालक पर संस्कार के महत्त्व पर विशेष व्याख्यान प्रस्तुत किए। वहीं माताओं ने ईश्वरभक्ति के गीत गाये। प्रिंसिपल साहब के दोनों पुत्र एम.बी.बी.एस. डॉक्टर होते हुए भी प्रतिदिन यज्ञ व सभी संस्कार बहुत श्रद्धा से करते हैं।

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	वेदप्रचार मण्डल (पलवल)	1 से 31 मई 2018
2.	स्त्री आर्यसमाज बालधनकलां (रेवाड़ी)	5 से 6 मई 2018
3.	आर्यसमाज सिहोर (महेन्द्रगढ़)	7 से 8 मई 2018
2.	वेदप्रचार मण्डल (रेवाड़ी)	11 से 20 मई 2018
2.	आर्यसमाज जाडरा (रेवाड़ी)	2 से 3 जून 2018

–रमेश आर्य, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

श्रीयुत राजेन्द्र 'जिज्ञासु'..... पृष्ठ 10 का शेष.....

युवा सभा की गोद में खेल रहे होते। क्या आज उस सभा की गोद सूनी नहीं है? संगठन को हरा-भरा रखने के लिए ऐसे विद्वानों का तर्पण आवश्यक है। हरयाणा में यह श्रेय पिछले दिनों श्री संजीव जी, मुआना (जीन्द) को मिला, जिन्होंने हमारे एक बार कहने से ही सफीदों मण्डी आर्यसमाज में इनका अभिनन्दन किया। स्थान-स्थान पर ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन हो।

यह मेरे जीवन का सुखद अनुभव है कि इनसे मेरा परिचय आर्यसमाज का कार्य करते हुए स्वाभाविक रूप से हुआ। सन् 2002 में जब मैं करनाल एक प्राइवेट विद्यालय में अंग्रेजी प्रवक्ता के रूप में सेवा देता था तो सप्ताहान्त में प्रात:कालीन प्रार्थना के बाद विद्यार्थियों को सम्बोधित करता था। विद्यालय के बगल में ही एक सेवानिवृत्त प्राचार्य श्री यशपाल भाटिया रहते थे। उन्होंने एक दिन मुझे अपने पास घर बुलाया। बाद में स्निग्ध स्नेह से मुझे उत्साहित व प्रेरित किया। ये आर्यसमाज के मूक व सच्चे सेवक हैं। बाद में पता चला कि इनके बेटे मेरे पिताजी के ही आयुर्वेद के शिष्य रहे हैं। लगभग इसके 6-7 वर्ष पश्चात् गुरुकुल सिंहपुरा में सेवा देते हुए मैं जब 'स्मृतियों की यात्रा' पढ़ रहा था तो मुझे पता चला कि श्री यशपाल भाटिया 'जिज्ञासु' जी के बड़े भ्राता हैं। बाद में इनसे भी मेरा दूरभाष पर व आमने-सामने आत्मीय परिचय हो गया। जब 2013 में पानीपत आर्य बाल भारती विद्यालय में सेवा देने गया तो वहाँ डी.ए.वी. के रीजनल डॉयरेक्टर डॉ. धर्मदेव 'विद्यार्थी' से आर्यसमाज के प्रचार के लिए आत्मीय सम्बन्ध बना। बाद में पता चला कि आप 'जिज्ञासु' जी के दामाद हैं। आर्यसमाज का कार्य करते हुए इस महान् व्यक्तित्व से घनिष्ठ परिचय हेतु ये संयोग बने। मेरे जैसे कार्यकर्त्ता के लिए इससे बड़ा पारितोषिक क्या होगा? हे भगवान्! सदैव ऐसे महापुरुषों का विश्वास, शुभकामनाएं, आशीर्वाद मेरे पर बनी रहे।

सत्यार्थप्रकाश

समाज में फैले अन्धकार, अन्धविश्वास, गुरुडमवाद, भ्रूणहत्या आदि बुराइयों को मिटाने के लिये सत्यार्थप्रकाश हरयाणा के प्रत्येक घर तक पहुंचाने का यत्न किया जाये।

यज्ञ के उपरान्त एस.पी. सोनीपत को वैदिक साहित्य भेंट करते हुए वेद प्रचार अधिष्ठाता श्री रमेश आर्य।

आर्य समाज बसई में यज्ञ प्रशिक्षण शिविर में भाग लेते हुए श्री महेन्द्रसिंह धनखड़, सुभाष सांगवान, निगम मुनि आदि।

जीन्द के राजपरिवार में हवन करवाते हुए आचार्य सर्वमित्र आर्य।

सभा ने वेद प्रचार कार्य को और गति प्रदान करने के लिए चार नए रथ खरीदें हैं।

आर्य समाज गुरुग्राम के वार्षिक उत्सव में अपने विचार रखते हुए सभा प्रधान मा० रामपाल आर्य।

पानीपत के अलुपुर गांव में वेद प्रचार करते हुए आचार्य अभय आर्य एवं उनकी टीम।

पानीपत के संजौली गांव में वेद प्रचार करते हुए आचार्य अभय आर्य एवं उनकी टीम।

पानीपत के रामड़ा गांव में वेद प्रचार करते हुए आचार्य अभय आर्य एवं उनकी टीम।

स्वामी दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

प्रान्तीय आर्य वीर दल शिविर

03 जून 2018 से 10 जून 2018

आचार्य बलदेव जी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्द मठ, रोहतक

पंजीकरण प्रारम्भ

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान में प्रान्तीय आर्य वीर दल शिविर का आयोजन किया जा रहा है। आर्य समाज शिविरों के माध्यम से युवाओं को नशामुक्ति, चरित्र निर्माण, वैदिक संस्कार, ब्रह्मचर्य शिक्षा, राष्ट्रसेवा की भावनाओं को भरकर अनुशासित जीवन जीने की प्रेरणा देता है। अतः आप सभी से निवेदन है कि इस दूषित वातावरण में अपनी सन्तानों को सुसंस्कार देना चाहते हैं तो आप अपने बच्चों को इस शिविर में जरूर भेजें।

आवश्यक सामान 2 खाकी हॉफ पेन्ट, 2 सफेद सैण्डो बनियान, सफेद जूते, 2 सफेद मौजे, 2 लंगोट, लाठी, कॉपी-पेन, हल्का बिस्तर, थाली, चम्मच, गिलास एवं अन्य दैनिक उपयोगी सामान।

नोट
- शिविरार्थियों को 03 जून को प्रातः 9 बजे तक शिविर स्थल पर पहुंचना अनिवार्य है।
- अपने साथ मोबाइल, कैमरा एवं अन्य कीमती सामान साथ न लाएं।
- शिविर में पूर्ण अनुशासन में रहना होगा अन्यथा उसे शिविर से पृथक् कर दिया जाएगा।

प्रवेश शुल्क
300 रु/- (दो पासपोर्ट साइज फोटो साथ लाएं।)
शिविर केवल 13 से 20 वर्ष के लड़कों के लिए है।

निवेदक : आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्द मठ, रोहतक 08199938001, 9416503513

Postal Regn. - RTK/010/2017-19
RNI - HRHIN/2003/10425

"आर्य प्रतिनिधि" लौटाने का पता :

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक
हरियाणा, 124001

श्री ....

पता ....

....

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

– सम्पादक उमेद शर्मा